

①

मोहन वृंदावन क्रीडत कुंज बन्धो एक भाय । शरद निशा जगमग रही
 मोहन बेन बजाय ॥ बेन बजावत टेरसों ठाड़े द्रुमकी छाई । ब्रजनारी
 व्याकुल भई घर घर तें उठ धाई ॥ नंदलाल तुम्हें जानिके आई तिहारे
 पास । सो चरित्र विधिने रच्यो संग मिलि खेलें रास ॥ चाला ॥
 शरद निशा उजियारी । वनमें ठाड़े कुंज विहारी ॥ मुरली मधुर
 बजाई । ब्रजवधू सुनत उठि धाई ॥ चाला ॥ सुनत ब्रजवधू उठजु
 धाई भवनपति सब उन तजे ॥ भई अति चित्त काम आतुर उलटि
 आभरण अंग सजे ॥ एक लोचन दियो अंजने बिन आंजे चली ॥
 कमल मुख हरि दरस प्यासी प्रीति मन उपजी भली । नंदनंदन चरण
 परसे मुदित गोकुलनारियां ॥ गोपी आय सन्मुख भई ठाड़ी शरदनिशि
 उजियारियां ॥ १ ॥ दोहा ॥ शरद रेन वृंदावन पूर्यो बैन मुरारि।
 हरिदरसनकी लालसा आई सबे ब्रजनारि ॥ चाला ॥ ब्रजनारि सबे
 मिलि आई । देखनकुं यादो राई ॥ सुंदर नहीं कोऊ त्रिभुवन ऐसो ॥
 हरि कोटि मदनश्याम जैसो । जाके मस्तक मुकुट बिराजे देखत
 अंधिरायो भाजे ॥ जाके कुंडल झलके कान । उदयो रवि
 कोटिसमान ॥ जाके कंठ बनी वनमाला । पहैरै पट पीत गोपाला ॥
 वाके अंगुरी मुद्रिका सोहैं ॥ हरि उपमाकों नहीं को है ॥ नटवर
 भेख धर्यो यदुराई । ब्रजसुंदरि देखनकुं आई ॥ देखी ढिंग सबे
 ब्रजबाला । तिनसो बोले मदनगोपाला ॥ अर्धनिशा तुम क्यों आई
 यह तो निंद्य वेदश्रुति गाई ॥ चाला ॥ निंदियां श्रुति वेद गावे कुलवधू
 नहीं पति तजें । लोक कहैत तन लाज लागे परपुरुष तरुणी भजें ॥
 तुम जाउ भामिनी उलटी सब गृह जुगतनहिं इन बातियां । पति तुमारे
 पंथ जोवे याम जुग गई रातियां ॥ कुलवधू यह धर्म नाही कहत
 श्याम तमालजू । निठुर वचन गोपाल बोले देख ढिंग ब्रजबालजू
 ॥ २ ॥ दोहा ॥ गोपिनसों हरि हँसी कह्यो सबसुंदरि के राऊ ॥

दरस पायो तुम हमारो अपअपने गृह जांउ ॥ चाला ॥ गृह जांउ सबे
 ब्रजनारी ॥ मानो सीख हमारी ॥ वेद उपनिषद गावे सो कीजे ।
 निजपतिको आदर दीजे ॥ तुम कर्म धर्म संसारी । भजो एक पुरुष
 एक नारी ॥ सुन गोविंद मुखकी बानी । तब गोप तरुणी
 बिलखानी ॥ हम आई शरन तिहारी । ऐसी तेरी जुगत नहीं बनवारी
 ॥ टेका ॥ वन बिहारी जुगत नाही निठुर वचन न बोलनां । सुरत
 नाथ सुकंठ भुजधर कृष्ण हम संग खेलना । हम छांड सुत पति विपिन
 आई आस तुम लगी लाडिले । देहु मिलि मधुपान मोहन चाड अपनी

चाडिले ॥ अब जाय कैसे उलट सब गृह प्राण तजि दधि दानियां ।
 ऐसे विलख वचन गुवालि बोली सुन गोविंद मुख बानियां
 ॥३॥दोहा॥ विविध वचन कहे ग्वालिनी कृपा करो जु किन
 हरी । आई चरण शरण तिहारे गोपी बोली हँस करी ॥चाल॥
 तब गोपी हँसकर बोली हरि तुमसो लज्जा खोली ॥ जान्यो त्रिभुवनपति
 राई । हम सुत पति छांडके आई ॥ गोपिनके जियकी जानी श्री
 वृंदावन क्रीडा ठानी ॥ गिरधर हँसे दयाल मुरारी । तब वे बोल लई
 सब नारी ॥ रासमंडल प्रभु कीनो । मिलि गोपिनकों सब सुख दीनो
 ॥टेका॥ सुख दियो गोपिन रास रंग रचि वधू वधू प्रति वपु धरें ।
 भई रसमय मगन क्रीडा कामिनी कारज सरे ॥ अधर मधुर पिवाय
 पीवत केलि भूतल सुठि रचे । भूमि राजत कनक मणिमय पांच खंभ
 ढिंग ढिंग खचे ॥ चंद गगन सु भूल थकि रह्यो सबन अबलन मन
 वसे । कहत कृष्णा मानमर्दन दयानिधि गिरिधर हंसे ॥४॥दोहा॥
 रास मंडल गिरिधर रच्यो दे गोपिन सुख दान ॥ राधा संग सबे सखी
 तब भये हरि अंतर्धान ॥चाल॥ जब हरि भये अंतरधान ।
 गुणसागर रूप निधान ॥ गोपी सब संध्रम मिल डोले ॥ श्याम श्याम
 कहि कहि बोले ॥ पूछे गुल्म लता द्रुमवेली । कहूं देखे श्याम सहेली
 ॥दोहा॥ पिया संग एकांत मिल विलसे राधा नारि ॥ कंध चढ़न
 प्रभुसों कह्यो तब तजि गये मुरारि ॥चाल॥ तब तजि गये गोपाल
 मुरारी । पिय अपने संगते टारी ॥ तहां सबे सखी मिल धाई ।
 एकहूं देखे गोविंद राई । मैं तो मान कियो मेरी माई । तातें भये हे
 लोप कन्हाई ॥दोहा॥ कंज कुंज दूंदत फीरत खोजत खोज दयाल
 प्राणनाथ पाये नहीं तब विकल भई ब्रजबाल ॥चाल॥ तब विकल
 भई ब्रजवाल पूछत फिरे तरुणि तमाल ॥ पूछत चंपक जाई गुलाला
 कहूं देखे नंदके लाला ॥ जाई जुही कदंब वट बूझे । विरहाकुल
 तरुणी नहीं सूझे ॥दोहा॥ कृष्णचरित्र गोपिन कियो विरहा व्याप्यो
 बाल । एक भई तहां पूतना एक भई गोपाल ॥चाल॥ एक भई
 गोपाल ललारी । तिन दुष्ट पूतना मारी । एक भेख दामोदर धारे ।
 तिन यमला अर्जुन तारे । एक भेख मुकुंदको कीनो । तिन तृणावर्त
 हर लीनो ॥दोहा॥ प्रेम प्रीति हरि जानके आये उनके पास । मुदित
 भई तब भामिनी । गुण गावे कृष्णदास ॥चाल॥ गुण गावे
 कृष्णदास ॥ मिल शरद रैन रच्यो रास ॥ राधा पाणि पाणि
 करजोरें ॥ तब ब्रज ललनां चित चोरें ॥ जल थल क्रीडा सचुपावे
 ताते कमल नयन जिय भावे ॥ तब इंद्र निशान बजावे । गिरधर
 यश कृष्णदास गावे ॥

②

★ राग रासकली ★ देखो देखोरी नागर नट निरत कालिंदी तट गोपिनके
मध्य राजे मुकुट लटक । काछिनी किंकणी कटि पीतांबरकी चटक
कुंडल किरण रविरथकी अटक ॥१॥ तत थेई ताता थेई शब्द
सकल घट उरप तिरप गति पगकी पटक । रासमें श्री राधे राधे मुरलीमें
एक रट नंददास गावे तहां निपट निकट ॥२॥ ★ राग रासकली★

③

★ राग खट ★ आज ब्रजराजको लाल ठाडो सखी ललित
संकेत वट निकट सोहे ॥ देखरी देख अनिमेष या भेषकी मुकुटकी
लटक त्रिभुवनही मोहे ॥१॥ स्वेद कन झलक कछु झुकीसी पलक
प्रेमकी ललक रस रास कीये ॥ धन्य बडभाग वृषभाननंदिनी राधिका
अंसपर बाहु दीये ॥२॥ मनि जटित भूमि पर रही नवलता झूमि
कुंज छबि पुंज कहि न जाई ॥ नंदनंदन चरन परसि हित जान कै

④

मुनिन के मन मिली पांति लाई ॥३॥ महा अद्भुतरूप सकलरस
भूप यह नंदनंदन बिना कछु न भावे ॥ धन्य हरि भक्त जिनकी
कृपातें सदा कृष्ण गुन गदाधर मिश्र गावे ॥४॥ ★ राग

⑤

बिलावल★ निरत राधा नंदकिशोर । ताल मृदंग सहचरी बजावत बिच
बिच मोहन मुरली कल घोर ॥१॥ उरप तिरप पग धरत धरणिपर
मंडल फिरत भुजन भुज जोर । शोभा अमित विलोक गदाधर रीझ
रीझ डारत तृणतोर ॥२॥ ★ राग टोडी★ श्री वृषभाननंदनी नाचत
रास रंग भरी ॥ उरपतिरप लागडाट उघटत संगीत शब्द तत थेई
थेई थेई थेई बोलत जगत वंदिनी ॥१॥ नाचत स्वरताल मृदंग लेत
युवति सुधंग कोककला निपुण सरस काम कंदिनी ॥ रिझवार देत
प्राण प्रभु मुकुंद अति सुजान मोही कलगान त्रिय प्रेम फंदिनी ॥२॥

⑥

★ राग सारंग ★ बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु श्याम सुंदर कमल नयन
वांकी भ्रोंह ललित भाल घूंघर वारी अलकें ॥ पीत वसन मोती माल
हिये पदक कंठ लाल हंसन बोलन गावन गंडन श्रवण कुंडल झलकें
॥१॥ कर पद भूषण अनूप कोटि मदन मोहनरूप अद्भुत वदन
चंद देख गोपी भूलि पलकें ॥ कहि भगवान हित रामराय प्रभु ठाडे
रास मंडलमें राधासों बांह जोटी किये हिये प्रेम ललकें ॥२॥

⑦ ★ राग सारंग ★ निरत मंडल मध्य नंदलाल ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर गरे गुंजावन माल ॥१॥ ताल मृदंग संगीत बजत हे तत थेइ बोलत हे बाल ॥ उरप तिरप तान लेत नट नागर गंधर्व गुनी रसाल ॥२॥ वाम भाग वृषभाननंदिनी गज गति मंद मराल ॥ परमानंद प्रभुकी छवि निरखत भेटत उरके साल ॥३॥ ★ राग

⑧ — नट★ नागरी नट नारायण गायो ॥ तान मान बंधान सप्त स्वर रागसो राग मिलायो ॥१॥ चरण घुंघरू जंत्र भुजनपर नीकोझमक जमायो ॥ तत थेई तत थेई लेत गतिमें गति ब्रजराज रिझायो ॥२॥ सकल त्रियनमें सहज चातुरी अंग सुधंग दिखायो ॥ व्यास स्वामिनी धन्य धन्य राधा रासमें रंग मचायो ॥३॥

⑨ — ★ राग पूर्वी ★ निरत गोपाल लाल तरणि तनया तीरे । युवतीजन संग लिये मन्थ मन करण लिये अंग अंग सुखद किये राजत बलवीरे ॥१॥ लावण्य निधि गुणआगर कोककला गुणसागर त्रिविधताप हरत शीतल समीरे । आसकरन प्रभु मोहननागर गुणनिधान संगीत सागर रिझवत ब्रजवधू नागरि फरकत पटपीरे

⑩ — ॥२॥ ★ राग मालव ★ वृंदावन अद्भुत नट देखियत विहरत कान्हर प्यारो ॥ गोवर्धनधर श्याम चंद्रमा युवतिन लोचनतारो ॥१॥ सुखद किरण रोमावलि वैभव उर नवमणिगणहारा ॥ ललनयुवतिपर भेष बिराजत पानकरत मधुधारा ॥२॥ ब्रजजन नवलचकोर अतिलोचन श्रवत अमृत अनुसार ॥ भज कृष्णदास

⑪ — सुरतसुख जलनिधि हुलसत वारंवारा ॥३॥ ★ राग मालव ★ रास विलास रस भरे निरत नवल किशोर ओर नवल किशोरी ॥ एकही वेष एक रूप गुण गिरिधर श्याम राधिका गोरी ॥१॥ नव पटपीत अरु नवभूषण नवकिंकिणी कटि युग थोरी ॥ दुहुंदिसि सकल सिंगार बिराजत मानो त्रिभुवन सौभागता चोरी ॥२॥ तान बंधान वेणु रव सों मिलि विधना रची सरस यह जोरी ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर

⑫ — सुरत केलिमें कंचुकी छोरी ॥३॥ ★ राग मालव ★ चंद गोविंद गोपी तारागण बने रासमें बनवारी ॥ मुख प्रताप रंजित श्री वृंदावन नवल युवति जन सुखकारी ॥१॥ कमल नयन कमनीय मनोहर मनहरणी गोकुल नारी ॥ हस्तकमलपर गलित कुसुम दल नृत्यमान प्रीतम प्यारी ॥२॥ रसमय रास रसिकनि भामिनी अति रसाल बने बिहारी ॥ कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिकराय श्रीगोवर्धनधारी

(१३) ★ राग मालव ★ आज गोपाल रास रस खेलत पुलित
कल्पतरु तीरा ॥ शरद विमल नभ चंद बिराजत रोचत त्रिविध समीरा ॥१॥ चंपक बकुल मालती मुकुलित मत्त मुदित अलिकीरा ॥
लेत सुधंग राग रागिनको ब्रज युवतिनकी भीरा ॥२॥ मधवा मुदित
निसान बजावत ब्रत छांडत मुनि धीरा ॥ हित हरिवंश मगन मन

(६४) श्यामा हरत मदन मन पीरा ॥३॥ ★ राग मालव ★ तुत थेई रास
मंडलमें बन नाचत पियके संग प्रीतम प्यारी । गावत सरस सुजात
मिलावत चपल कुटिल भ्रू अनियारी ॥१॥ मालव राग अलापत
भामिनी लेत उरप नागर नारी । प्यारीके संग वेणु बजावत सुधरराय
गिरिवरधारी ॥२॥ कृष्णदास प्रभु सौभग सीमा सब युवतिनमें
सुकुमारी । जोरी अद्भुत प्रकटित भूतल केलिकला रस मनहारी

(१५) ॥३॥ ★ राग इमन ★ गिड़गिड़ तां तां तां धितां धितां मंदिलरा
बाजे । तांधिलां धिलां धिलां धिधिकट धिधिकट धनननन थुंग
गिड़गिड़थुं गिड़गिड़थुं घन प्रचंड गाजे ॥१॥ थुंग थुंग थुंग थुंग

थर थर तनननननन थेई थेई शब्द उघटत नटवर नट राजे । कृष्णदास
प्रभु गिरिधर प्यारी संग नृत्य करें अंग अंग कोटि सुलक्षण मन्यथ मन
(६५) लाजे ॥२॥ ★ राग बिहागरो ★ वनमें रास रच्यो बनवारी । यमुना
पुलिन मल्लिका फूली शरद रेन उजियारी ॥१॥ मंडल बीच
श्यामघन सुंदर राजत गोपकुमारी । प्रगटत कला अनेक रूप तिहिं
अवसर लाल बिहारी ॥२॥ शीश मुकुट कुंडलकी झलकन अलक
बनी घुंघरारी । कंबु कंठ ग्रीवाकी डोलन छीन लंक लेहेकारी ॥३॥
धाय धाय झपटत उर लपटत उरप तिरप गति न्यारी । नृत्यत हंसत
मयूर मंडली लागत शोभा भारी ॥४॥ वेणुनाद ध्वनि सुन सुरनर
मुनि तनकी दशा बिसारी । श्री विठ्ठल गिरिधरनलालकी बानिकपर
(६७) बलिहारी ॥५॥ ★ राग बिहागरो ★ नृत्यत रासमें पिय प्यारी ॥
यमुना पुलिन सुभग वृंदावन शरद रेन उजियारी ॥१॥ बाजत ताल
मृदंग झांझ ओर सप्त स्वरन गति न्यारी । उरप तिरप गति लेत सुलप
अति लाइली लाल बिहारी ॥२॥ जय जय कहि बरखत कुसुमावलि
सुरन सहित सुरनारी ॥ श्री विठ्ठल गिरिधरनलालपर सर्वसु डारत
(६९) वारी ॥३॥ ★ राग बिहागरो ★ रास रच्यो बंसीवटके तट । नृत्यत
प्रेम भरे पिय प्यारी चंद वदनपर छूट रही लट ॥१॥ सुंदरश्याम
सुभग कर मुरली अधर धरें अघटत थेई थेई रट । मोर मुकुट कुंडलकी
डोलन मुरझि पर्यो लखि मेन महा भट ॥२॥ ब्रजवनिता छबि देख
विमोही वार देत आभूषण ओर पट । लीला ललित महामुनि मोहे श्री
विठ्ठल गिरिधर नागर नट ॥३॥

કીર્તન સંગ્રહ

રાસ ના પદ

॥ રાગ ભૈરવ ॥

(૧૯)

માંન લાગ્યો ગિરધર ગાવે ॥
તત થેઈ તત થેઈ તતતાથેઈ થેઈ ભૈરો રાગ - મુરલી બજાવે ॥૧॥
નાચત નવ વૃષભાન દુલારી અબ ધર ગતિમેં ગતિ ઉપજાવે
ગિરિધર પિય પ્યારીકી પદરજ કૃષ્ણદાસ લે શીશ ચઢાવે ॥૨॥
॥ રાગ રામકલી ॥

(૨૦)

નિર્તન શ્યામ શ્યામા હેત ॥
મુકુટ લટકન ભૂકુટી મટકન નારી - મન સૂખ દેત ॥૧॥
કબહુ ચલત સુધંગ ગતિ લેત, કબહુ ઉઘટન પેન ॥
લોલ કુંડલ ગંડ મંડિત અપલ નયનન સેન ॥૨॥
શ્યામકી છબી નીરખ નાગર રહી ઈકટક જોઈ ॥
સૂર પ્રભુ ઉર લાય લીની પ્રેમ ગુણ કરપોઈ ॥૩॥
॥ રાગ ખટ ॥

(૨૧)

ચલ ચલ જહાં શી ગોવર્ધન ધર બહુવિધ શોભા રાજેરી ॥
નંદ કિશોર ચશોદા નંદન કોટિ મદન છબિ લાજેરી ॥૧॥
મોર મુકુટ પીતાંબર સોહે મુખ મુરલી કલ બાજેરી ॥
શ્રીમદ્ પલ્લભ ચહ અવસર રસિકન શિર નિત્ય ગાજેરી ॥૨॥
॥ રાગ સારંગ ॥

(૨૨)

રાસમેં નાચત લાલ વિહારી, નચવત હેં સબ વ્રજકી નારી ॥
તા થેઈ તા થેઈ તતતા થેઈ થેઈ, યુગનિ યુગનિ તટ કિત તારી ॥૧॥
શ્રી રાધા એક તરજત મિલવત, લેત અલાપે સપ્ત સ્વર ભારી ॥
કૃષ્ણદાસ નટ નાચ્ય રસિક પર કુશલ કેલી શ્રી ગોવધનધારી ॥૨॥

(૨૩)

શ્યામ સજની શરદ રજની પુલીન મધિ નિતર્ત નટ ત્રગતાં ત્રગતાં તિરપ બંદ કરત સ્વામિની ॥
ગિડિ ગિડિ ઘિકઘિક ઘિલાંડ ઘિ ઘિ કટતા લાગ લઈ ઝં ઝં ઝં ઝનન નનન સ્વર ઉપંગિની ॥૧॥
શ્યામકો ચહ નાદ ભાવે તક ઘિકતા ગતિહિ ભાવે તત થેઈ થેઈ શબ્દ ઉઘટ કોટિ કામિની ॥
કૃષ્ણદાસ જશાહિ ગાવે કર તા થેઈ થેઈ નચાવે, કાકૃતિ કાકૃતિ કર મૃદંગિની ॥૨॥